हिंदी (लोकभारती)

अभ्यास के लिए कृतिपत्रिका 3 के उत्तर

प्र. 1. (अ)

(1) **गोपाल प्रसाद की दृष्टि में बहू ऐसी हो –**

- खूबसूरत हो।
- सिलाई-पुराई जानती हो।
- अधिक पढ़ी-लिखी न हो।
- चश्मा न पहनती हो।

(2) (i) अच्छा तो साहब, फिर बिजनेस की बातचीत हो जाए।

(ii) जरा नाश्ता तो कर लीजिए।

(iii) ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो।

(iv) वाकई आजकल खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है।

(3) (i) दोस्त × दुश्मन (ii) आमदनी × खर्च

(iii) मुश्किल × आसान (iv) खूबसूरती × बदसूरती।

(4) गोपाल प्रसाद विवाह को एक बिजनेस मानते हैं। जिस प्रकार एक व्यापारी पहले अपने लाभ-हानि का विचार करता है, फिर व्यापार करता है। उसी प्रकार गोपाल प्रसाद अपने डॉक्टर पुत्र का विवाह एक संपन्न परिवार में करना चाहते हैं। हिंदू समाज में विवाह एक ऐसा पवित्र बंधन माना जाता है, जो दो परिवारों को सदा के लिए एक कर देता है। दोनों परिवार एक-दूसरे के सुख-दुख में साथी होते हैं। परंतु गोपाल प्रसाद के लिए विवाह दो परिवारों का मिलन न होकर एक प्रकार का बिजनेस है। वे चाहते हैं कि एक अच्छी हैसियत वाले परिवार की कम पढ़ी-लिखी लड़की से बेटे का विवाह कराया जाए, ताकि बढ़िया-सा दहेज मिले और बहू बिना किसी नाज-नखरे के घर के कामों में लगी रहे।

प्र. 1. (आ)

(1) **आश्रम के नियम –**

- आश्रम की व्यवस्था या संचालन में पुरुष का संबंध नहीं होगा।
- आश्रम का विज्ञापन अखबार में नहीं दिया जाएगा।
- आश्रम के लिए पैसे माँगने नहीं जाना है।
- आश्रम को सभी धर्म मान्य होंगे।

(2) (i) गरीब स्त्री की सिफारिश कर आश्रम में दाखिल
कराने वाली स्त्री का खर्च ये देंगे – सिफारिश करने वाले लोग।
(ii) आश्रम में स्वावलंबन की मात्रा – यथासंभव।
(iii) आश्रम में ये सिखाए जाएँगे – उपयोगी उद्योग।
(iv) आश्रम यह संस्था नहीं होगी – शिक्षा संस्था।

(3) (i) पुरुष × स्त्री (ii) गरीब × अमीर
(iii) स्वतंत्र × परतंत्र (iv) मान्य × अमान्य।

(4) हमारे देश में आश्रमों की कल्पना बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है। राजा-महाराजा बूढ़े हो जाने पर राज-पाट छोड़कर वानप्रस्थ आश्रम अपना लेते थे और अपना शेष जीवन जंगलों में कुटी बनाकर सामान्य मनुष्य की तरह बिताया करते थे। पर आज वैसा समय नहीं रहा और राजा-महाराजा भी नहीं रहे। अब समाज में नई तरह की समस्याएँ खड़ी हुई हैं। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। पति-पत्नी में संबंध-विच्छेद हो रहे हैं। इसका प्रभाव बच्चों पर पड़ रहा है। ऐसे में बच्चे घर से भागते हैं। वृद्ध माता-पिता बेटे-बहू के लिए भार लगने लगते हैं। इन सब समस्याओं ने आधुनिक ढंग के आश्रमों को जन्म दिया है। इसके परिणामस्वरूप आज देश में वृद्धाश्रम, महिला आश्रम तथा बाल-आश्रम (बाल सुधारगृह) जैसे आश्रमों का निर्माण किया जा रहा है। इन आश्रमों में तिरस्कृत, उपेक्षित और परित्यक्त बच्चों, महिलाओं और वृद्धों को सहारा मिलता है। इन आश्रमों में इन्हें अपना सुरक्षित जीवन जीने का अवसर मिलता है। आश्रम आज के समय की आवश्यकता हैं। यही कारण है कि वर्तमान समाज मे आश्रमों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

प्र. 1. (इ)

(1)

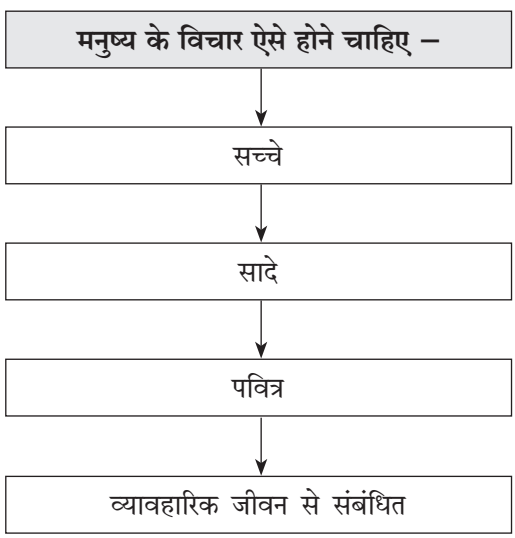

(2) संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक वे जो वैभव संपन्न लोग होते हैं और अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए, दिखावे के लिए आडंबरपूर्ण जीवन जीते हैं। वे प्रदर्शनप्रिय होते हैं। दूसरे वे जो सादगीपूर्ण जीवन जीते हैं, पर उनके विचार बहुत ऊँचे होते हैं। सादगी एक दुर्लभ गुण है। सादगीपूर्ण जीवन जीने वाला व्यक्ति अपने आप में संयम का विकास कर सकता है। इससे उसमें अनेक सद्गुण अपने आप आ जाते हैं। सादा जीवन जीने वाला व्यक्ति एक संत की भाँति जीता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सादा जीवन और उच्च विचार के जीते-जागते मिसाल हैं। उनके शरीर पर एक धोती के अलावा अन्य कोई वस्त्र नहीं रहता था। वे अपने सभी काम स्वयं करते थे। किंतु उनके विचार बहुत ऊँचे थे। आज सारा विश्व

गांधी जी की सादगी और उनके उच्च विचारों का कायल है। जो व्यक्ति 'सादा जीवन, उच्च विचार' वाले दुर्लभ गुण को अपने जीवन में उतार लेता है, वह प्रशंसनीय एवं दूसरों का आदर्श बन जाता है।

प्र. 2. (अ)

(1) (i) घिरी हुई हैं
- ये – मीराबाई
- यहाँ – संसार रूपी सागर में

(ii) नाम रटती रहती हैं
- ये – मीराबाई
- इनका – राम का

(2) (i) कूण – कहाँ (ii) रावरी – आपकी
(iii) बेरी – बेड़ा (iv) नेरी – पास, निकट।

(3) हे हरि, आपके बिना मेरा कौन है? अर्थात आपके सिवा मेरा कोई ठिकाना नहीं है। आप ही मेरा पालन करने वाले हैं और मैं आपकी दासी हूँ। मैं रात-दिन, हर समय आपका ही नाम जपती रहती हूँ। मैं बार-बार आपको पुकारती हूँ, क्योंकि मुझे आपके दर्शनों की तीव्र लालसा है।

प्र. 2. (आ)

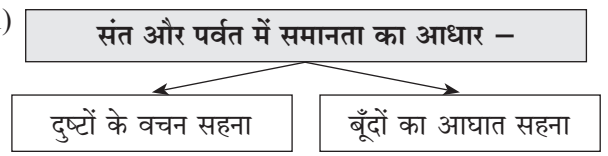

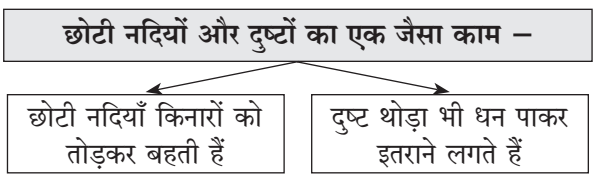

(1) (i) **संत और पर्वत में समानता का आधार –**
- दुष्टों के वचन सहना
- बूँदों का आघात सहना

(ii) **छोटी नदियों और दुष्टों का एक जैसा काम –**
- छोटी नदियाँ किनारों को तोड़कर बहती हैं
- दुष्ट थोड़ा भी धन पाकर इतराने लगते हैं

(2) (i) जलनिधि = समुद्र (ii) गिरि = पहाड़
(iii) नदी = सरिता (iv) जल = पानी।

(3) बादल आकाश में उमड़-घुमड़कर भयंकर गर्जना कर रहे हैं। श्रीराम जी कह रहे हैं कि ऐसे में सीता जी के बिना उनका मन भयभीत हो रहा है। बिजली आकाश में ऐसे चमक रही है, जैसे दुष्ट व्यक्ति की मित्रता स्थिर नहीं रहती। कभी वह बनी रहती है और कभी टूटने के कगार पर पहुँच जाती है। बादल धरती के नजदीक आकर बरस रहे हैं। उनका यह व्यवहार ठीक उसी प्रकार लगता है, जैसे विद्वान व्यक्ति विद्या पाकर विनम्र हो जाते हैं। बादल भी जल के भार से झुक गए हैं और पृथ्वी के नजदीक आकर अपने जल से प्राणियों को तृप्त कर रहे हैं। पहाड़ों पर वर्षा की बूँदों की चोट पड़ रही है, पर पहाड़ चुपचाप शांत भाव से यह आघात उसी प्रकार सहते जा रहे हैं, जैसे संत लोग दुष्टों के कटुवचन सह लेते हैं और उस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करते।

प्र. 3. (अ)

(1)

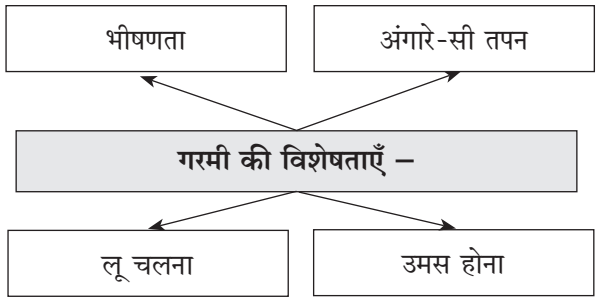

(2) हम अधिकतर दिखावे में विश्वास करते हैं। जब हम बड़े-बड़े शॉपिंग सेंटरों और मॉल में जाते हैं, तो वस्तुओं की कीमतों को लेकर हम कभी मोल-भाव नहीं करते। वहाँ सैकड़ों लोग सामान खरीदते हैं और कीमतों को लेकर कोई मोल-भाव नहीं करता। वहाँ भाव ज्यादा होते हुए भी उसके बारे में पूछने की हिम्मत नहीं होती। क्योंकि वहाँ इज्जत का सवाल होता है। कभी-कभी तो वहाँ ठगाकर लोग चले आते हैं, पर शर्म के मारे कुछ नहीं बोलते। मगर वही लोग बाजार में छोटे दुकानदारों या खोमचेवालों से दो-चार रुपए के लिए झिक-झिक करते देखे जाते हैं। यहाँ उनको अपनी इज्जत की परवाह नहीं रहती। क्योंकि यहाँ बड़े ग्राहकों के सामने उनको अपने इस व्यवहार पर झेंपने का डर नहीं रहता। यहाँ वे अपने को बड़ा दिखाते हैं। क्योंकि सामने गरीब आदमी होता है।

हमें अपनी सोच में बदलाव लाने की जरूरत है। छोटे व्यापारियों या गरीब खोमचेवालों से खरीदे जाने वाले सामान में मोल-भाव करने में झिक-झिक करना उचित नहीं है।

प्र. 3. (आ)

(1) (i) रेल की पटरियाँ अनंत काल से साथ चल रही हैं, परंतु वे सदा मौन रहती हैं। एक-दूसरे से कभी बात नहीं करतीं।

(ii) (1) सूना आकाश।

(2) गीतों का अमर होना।

(2) मनुष्य के शरीर में विभिन्न अंग होते हैं और वे अपना-अपना निर्धारित काम करते हैं। कुछ अंगों से निर्धारित कामों के अलावा और भी कई तरह के काम लिए जाते हैं। आँखें हमारे शरीर का महत्त्वपूर्ण अंग हैं। इनसे देखने का काम तो लिया ही जाता है, साथ ही साथ और भी कई काम लिए जाते हैं। आँखों से तरह-तरह के इशारे किए जाते हैं, जिन्हें सामनेवाला आदमी आसानी से समझ लेता है। आँखें तरेरकर क्रोध प्रकट किया जाता है। आँखें झुकाकर शर्म प्रदर्शित की जाती है। मन में छुपी दुख देने वाली भावनाओं को आँखों में आँसू लाकर प्रकट किया जाता है। मन भारी होने पर लोग रोकर अपना मन हल्का करते हैं। कोई अचंभेवाली घटना होने पर वाणी के साथ-साथ आँखों से भी भाव प्रदर्शित होता है। आँखों का एक आवश्यक काम मनुष्य को निद्रावस्था में ले जाकर उसे आराम दिलाना है। इस तरह आँखें देखने के अलावा कई महत्त्वपूर्ण काम करती हैं।

प्र. 4.

(1) हँसी – भाववाचक संज्ञा।

(2) (i) वे खेलने या घूमने गए होंगे।

(ii) लड़का डर के मारे काँप रहा था।

(3)

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि-भेद
भोजनालय	भोजन + आलय	**स्वर संधि**

अथवा

निश्चय	**निः + चय**	**विसर्ग संधि**

(4)

सहायक क्रिया	मूल क्रिया
(i) जाऊँ	जाना
(ii) होगा	होना

(5)

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) लिखना	लिखाना	लिखवाना
(ii) मिलना	मिलाना	मिलवाना

(6) (i) दाँत पीसना।

अर्थ : क्रोध में दाँत पर दाँत रगड़ना।

वाक्य : बात-बात पर मुनीम जी की फटकार सुन कर चपरासी दाँत पीसने लगा।

(ii) हाथ का मैल होना।

अर्थ : बहुत तुच्छ वस्तु।

वाक्य : लाला रूपचंद के लिए छोटा-मोटा चंदा देना हाथ का मैल है।

अथवा

• मुहावरा : दम भरना।

किसी काम को करने का दम भरना और उसे कर दिखाना, दोनों में बड़ा अंतर है।

(7)

कारक चिह्न	कारक भेद
(i) चंद्रमा ने	कर्ता कारक
(ii) सुख से	करण कारक

(8) काकी ने पूछा – ''क्या तुम्हारी अम्मा ने दी है?''

(9) (i) घटनाएँ एक-एक कर सामने आ रही हैं।

(ii) गोवा में मुझे मेरे पुराने अध्यापक मिले।

(iii) विदा का क्षण आ जाएगा।

(10) (i) संयुक्त वाक्य।

(ii) (1) उन्हें काँपते हुए रात नहीं काटनी पड़ती है।

(2) तुम अपना ख्याल रखो।

(11) (i) उनके ऊपर ऐसा बोझ नहीं आएगा, जिससे कि उन्हें परेशानी हो।

(ii) बचपन का वह दिन याद आता है।

(iii) वे बोले, मैं अपना काम कर रहा हूँ।

प्र. 5. (अ), (आ) तथा (इ)

उपयोजित लेखन की कृतियों के स्व-मूल्यमापन संबंधी

उपयोजित लेखन के प्रश्नों को हल करते हुए विद्यार्थियों को अपने विचार, अपनी भाषा में लिखने होते हैं। ये प्रश्न मुक्तोत्तरी प्रकार के प्रश्न हैं। इनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

नमूना कृतिपत्रिका में दिए गए ऐसे प्रश्नों के उत्तर अंक योजना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं चेक करें और अपने द्वारा लिखे गए उत्तरों को जाँचें। आवश्यकता हो तो विद्यार्थी अपने विषय-शिक्षक की सहायता लें।

उपयोजित लेखन के अधिक अभ्यास हेतु '**नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन : कक्षा दसवीं**' में दिए गए उपयोजित लेखन के नमूनों का अध्ययन अवश्य करें।